nwda.gov.in

यमुना में गिरने वाले नालों की होगी मैपिंग

डीपीसीसी ने नालों से प्रदूषण की हिस्सेदारी पर तैयार की रिपोर्ट, रोका जाएगा सीवरेज का गिरना

संजीव गुप्ता . जागरण

नई दिल्ली: यमुना को प्रदूषित करने वाले सभी छोटे-बड़े नालों की अब मैपिंग होगी। देखा जाएगा कि कौन से नाले कहां, कैसे और किस हद तक यमुना में जहर घोल रहे हैं? फिर सीवरेज एवं सिल्ट को यमुना में गिरने से रोका जाएगा। नालों का गंदा पानी भी शोधित होकर ही यमुना में जाएगा।

यमुना की सफाई को लेकर कई विभाग समन्वय बनाकर काम कर रहे हैं। इनमें यमुना के किनारे अतिक्रमण, डूब क्षेत्र में मलबा-कचरा डालने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने एवं खुले में गिरने वाले नालों पर रोक जैसे तमाम कदम शामिल हैं। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने नालों से प्रदूषण की हिस्सेदारी पर एक रिपोर्ट भी तैयार की है। जिसके आधार पर अब पर्यावरण विभाग आगे की कार्ययोजना पर काम रहा है। रिपोर्ट बताती है कि दिल्ली में यमुना को प्रदूषित करने में सबसे बड़ी हिस्सेदारी नजफगढ़ नाले की है। यहां से 59.93 प्रतिशत बीओडी (बायोकेमिकल आक्सीजन डिमांड) लोड पड़ता है। फिर नंबर शाहदरा ड्रेन का आता है, जिसका बीओडी लोड 27.48 प्रतिशत है। 10 अन्य नाले भी प्रदूषित कर रहे हैं।

क्या है बीओडी के मानक: पानी में मौजूद आर्गेनिक प्रदूषकों को समाप्त करने में सूक्ष्म जीवों को आक्सीजन की जितनी मात्रा की आवश्यकता पड़ती है, उसे बीओडी कहते हैं। तीन मिलीग्राम प्रति लीटर से कम के बीओडी को अच्छा माना जाता है। किसी पानी में बीओडी की मात्रा जितनी ज्यादा है, इसका मतलब है कि वह पानी उतना ही ज्यादा प्रदूषित है व उसमें आक्सीजन की मात्रा उतनी ही कम है।

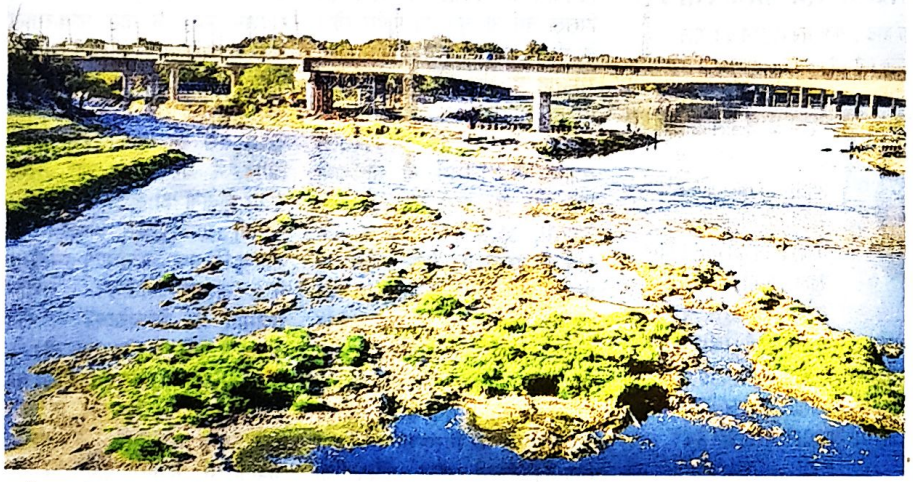

वजीराबाद में यमुना नदी में मिलता नजफगढ़ नाला (बायीं ओर) ● हरीश कुमार

किस नाले की है कितनी हिस्सेदारी

नजफगढ़ ड्रेन	59.93 प्रतिशत
शाहदरा ड्रेन	27.48 प्रतिशत
पावर हाउस ड्रेन	3.52 प्रतिशत
बारापुला	3.50 प्रतिशत
आइएसबीटी	1.57 प्रतिशत
सेन नर्सिंग होम	1.38 प्रतिशत
महारानी बाग	1.24 प्रतिशत
अबू फजल ड्रेन	0.49 प्रतिशत
कैलाश नगर	0.35 प्रतिशत
सोनिया विहार	0.23 प्रतिशत
जैतपुर	0.17 प्रतिशत
शास्त्री पार्क	0.13 प्रतिशत

यमुना की हालत में नहीं सुधार, फरवरी में और बिगड़े हालात

दिसंबर और जनवरी की तुलना में फरवरी में यमुना में प्रदूषण ज्यादा देखने को मिला है। डीपीसीसी की ओर से जारी फरवरी की आंकलन रिपोर्ट में प्रदूषक तत्वों की मात्रा में और अधिक इजाफा हो गया है। इसकी एक बड़ी वजह वर्षा की कमी बताई जा रही है। हालांकि कहीं-कहीं थोड़ा सुधार भी देखने को मिला है।

ये हैं सामान्य स्तर

बीओडी का सामान्य स्तर	5 एमजी प्रति लीटर या कम
डीओ का सामान्य स्तर	5 एमजी प्रति लीटर या अधिक
फीकल कालीफोर्म का सामान्य स्तर	500 से 2500 प्रति 100 मिलीग्राम

दिसंबर में इन स्थानों पर बीओडी, डीओ व फीकल कालीफोर्म का स्तर

जगह	बीओडी	डीओ	फीकल कालीफोर्म
पल्ला	4.0	6.1	1,200
वजीराबाद	6.0	5.3	3,300
आइएसबीटी ब्रिज	51	शून्य	6,40,000
आइटीओ ब्रिज	66	शून्य	15,00,000
निजामुद्दीन ब्रिज	45	शून्य	5,20,000
ओखला बैराज	37	शून्य	3,30,000
आगरा कैनाल	43	शून्य	3,40,000
असगरपुर	70	शून्य	84,00,000

जनवरी में इन स्थानों पर बीओडी, डीओ व फीकल कालीफोर्म का स्तर

जगह	बीओडी	डीओ	फीकल कालीफोर्म
पल्ला	3.0	6.0	9,500
वजीराबाद	7.0	6.0	2,800
आइएसबीटी ब्रिज	46	शून्य	5,20,000
आइटीओ ब्रिज	48	शून्य	6,90,000
निजामुद्दीन ब्रिज	39	शून्य	4,60,000
ओखला बैराज	50	शून्य	4,10,000
आगरा कैनाल	52	शून्य	4,30,000
असगरपुर	64	शून्य	79,00,000

फरवरी में इन स्थानों पर बीओडी, डीओ और फीकल कालीफोर्म का स्तर

जगह	बीओडी	डीओ	फीकल कालीफोर्म
पल्ला	6.0	6.0	1,300
वजीराबाद	9.0	5.3	3,500
आइएसबीटी ब्रिज	46	शून्य	5,40,000
आइटीओ ब्रिज	66	शून्य	43,00,000
निजामुद्दीन ब्रिज	52	शून्य	5,40,000
ओखला बैराज	39	शून्य	9,20,000
आगरा कैनाल	35	शून्य	9,20,000
असगरपुर	72	शून्य	1,60,00,000